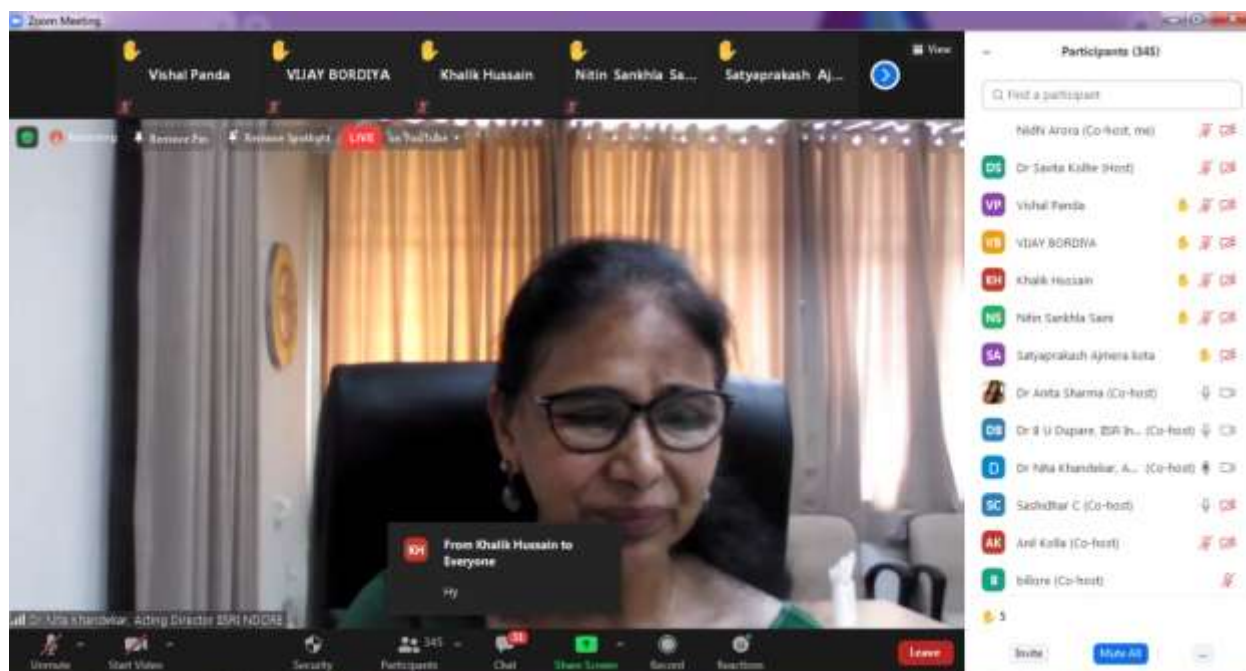
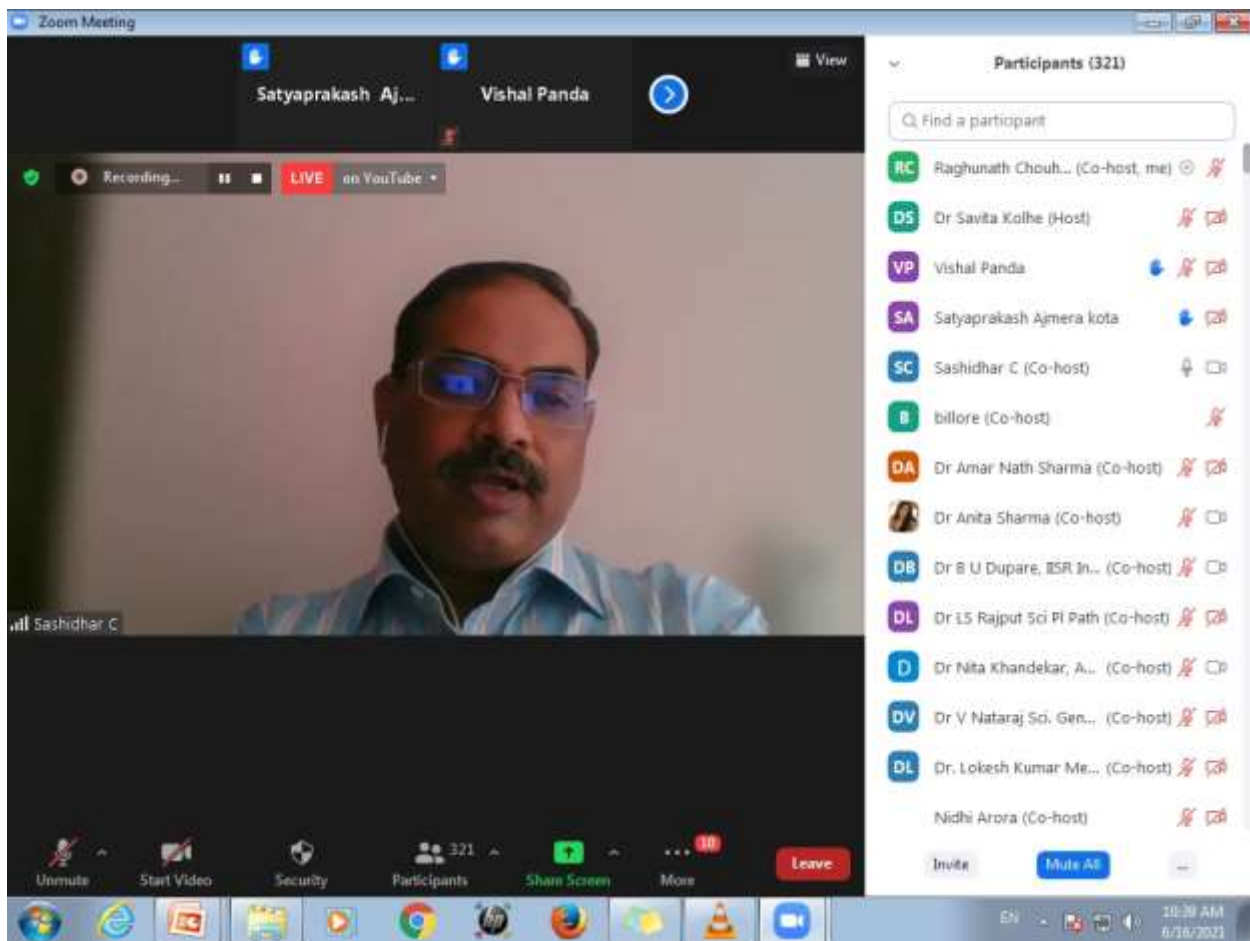


16 जून, 2021 को भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर एवं आई.टी.सी. ई-चौपाल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "सोयाबीन की उन्नत उत्पादन तकनीकों" पर ई-चौपाल से जुड़े कृषक एवं मैदानी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण'

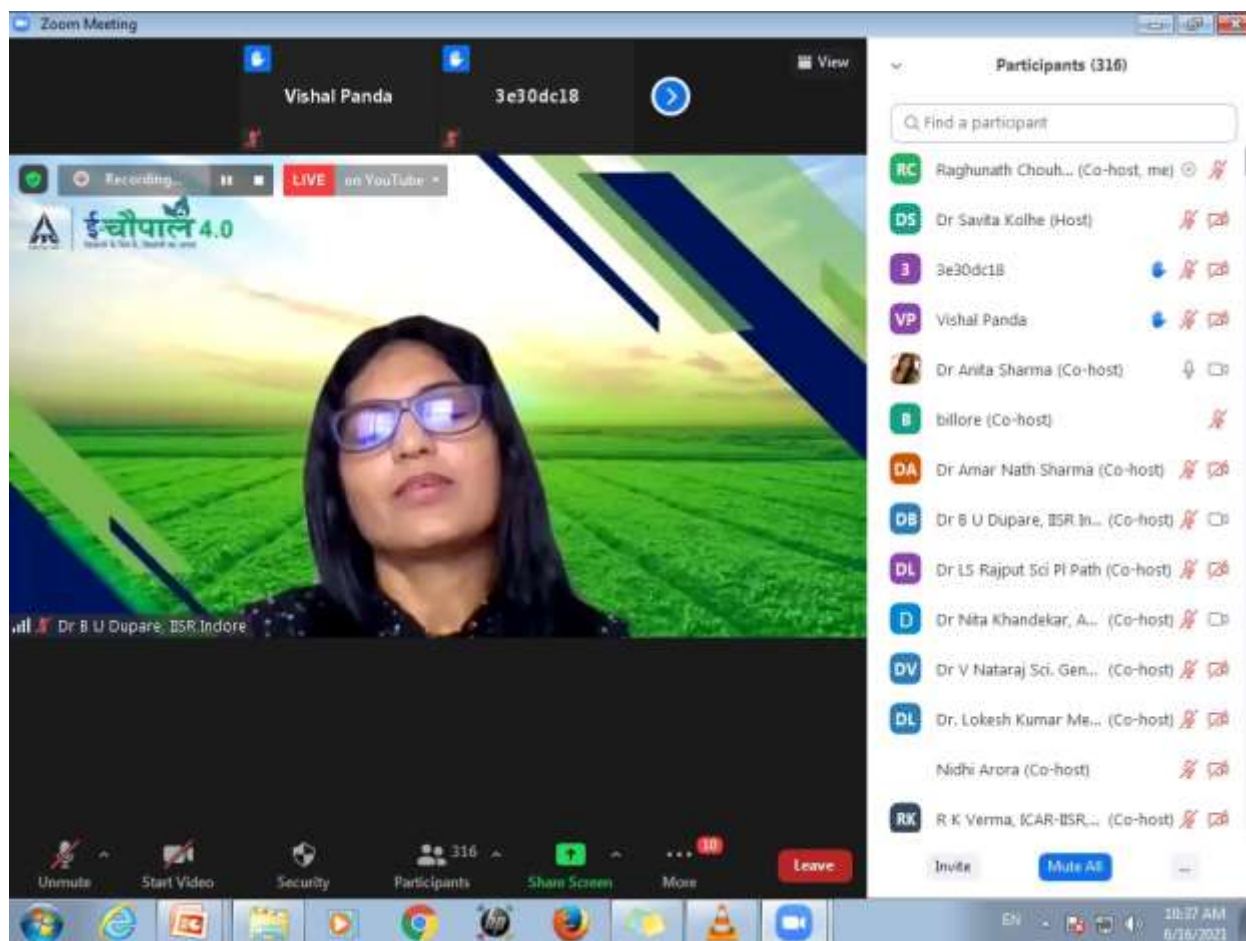
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर एवं आई.टी.सी. लिमिटेड कंपनी द्वारा संयुक्त रूप से "सोयाबीन की उन्नत उत्पादन तकनीकी एवं प्रमुख सस्य क्रियाएँ" विषय पर ऑनलाइन ज़ूम प्लेटफॉर्म पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें आई.टी.सी. ई-चौपाल कार्यक्रम से जुड़े मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान एवं गुजरात के लगभग 550 कृषकों तथा फील्ड स्टाफ ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रशिक्षण संयोजक डॉ. बी.यू. दुपारे ने सभी का स्वागत करते हुए सोयाबीन की उन्नत उत्पादन तकनीकी के प्रचार-प्रसार हेतु अच्छे चर्चा-सत्र में कृषकों के सकारात्मक सहयोग एवं तकनीकी के अंगीकरण की आशा व्यक्त की।



प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रारंभ में भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर की कार्यवाह निदेशक, डॉ. नीता खांडेकर ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहाँ कि सोयाबीन फसल की उत्पादकता बढ़ाने के मुख्य उद्देश्य से इस वर्ष भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान द्वारा किये जा रहे प्रयासों कि कड़ियों में अनेक प्रकार के प्रयास किये जा रहे हैं जैसे, कृषकों, विस्तार कर्मियों, छात्रों, अनुसंधानकर्ताओं के साथ-साथ सोयाबीन फसल से जुड़े सभी भागीदारों के लिए विगत माह से वेबिनारों के साथ-साथ ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहाँ कि वर्तमान स्थिति में सोयाबीन कृषकों द्वारा कम समयावधि कि किस्मों को दी जा रही प्राथमिकता के कारण में देश कि औसत उत्पादकता (लगभग 11-12 क्विंटल/हे) को अन्य देशों में कि औसत उत्पादकता (2.5 टन/हे) के साथ तुलना करना सही नहीं होगा क्यों कि वहाँ कि फसल कि औसत अवधि लगभग 150 दिन कि होती है। अतः हमारे किसानों कि पसंद-नापसंद तथा स्थानीय जलवायु स्थिति के अनुरूप सोयाबीन की अधिक उत्पादन क्षमता तथा कीट/रोग प्रतिरोधी किस्मों के विकास के साथ-साथ भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान हमेशा से प्रयासरत रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहाँ कि आनेवाले समय में हम सोयाबीन की औसत उत्पादकता को 15 क्विंटल/हे तक बढ़ाने में सफलता प्राप्त करेंगे।

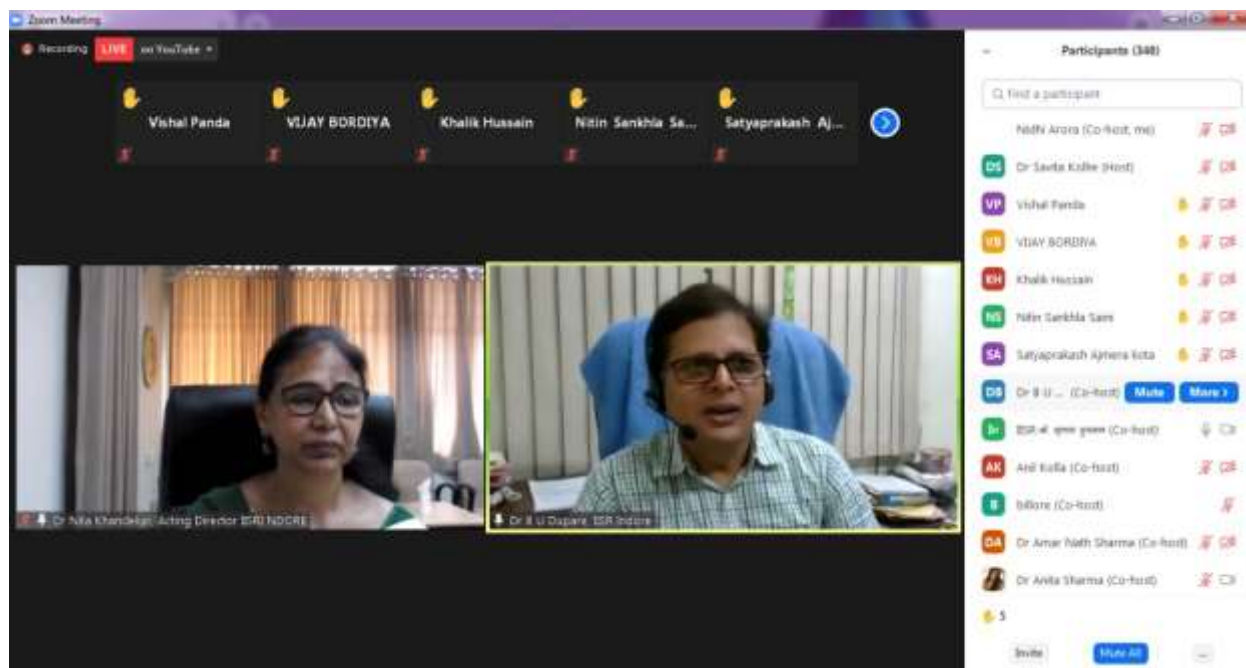


प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारम्भ के अवसर पर आई.टी.सी. के कृषि सेवा विभाग के अध्यक्ष श्री सी. शशिधर ने अपने संबोधन में आई.टी.सी. ई चौपाल के माध्यम से सीड बैंक बनाने के लिए कंपनी कि विस्तार सेवा से जुड़े लाभार्थी कृषकों को सोयाबीन कि नवीनतम जारी किस्मों के साथ-साथ उत्पादन के विभिन्न तरीकों एवं पद्धतियों से सोयाबीन कि बोवनी से किसानों का ज्ञानार्जन करने के लिए भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकों की भरपूर प्रशंसा कि. इसके साथ साथ आई.टी.सी. फसल सलाह विभाग की प्रभारी डॉ. अनीता शर्मा एवं श्री अनिल कोल्ला ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सोयाबीन कृषकों के उत्थान एवं खेती की उत्पादकता वृद्धि के लिए संयुक्त प्रयासों को अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता हेतु उनकी तत्परता दिखाई.



इस अवसर पर आयोजित प्रमुख रूप से कृषकोपयोगी 5 तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकों ने मार्गदर्शन एवं उपयुक्त जानकारी सहित प्रस्तुतीकरण एवं चर्चा की. संस्थान के डॉ मृणाल कुचलान ने अपने व्याख्यान में जलवायु सहिष्णु सोयाबीन की विभिन्न किस्में जैसे जे.एस. 20-69, जे.एस. 20-98, जे.एस. 20-34 तथा उनकी गुणवत्ता जांच के साथ-साथ कृषक अपने खेत पर बीज उत्पादन कैसे करें इस बाबत जानकारी दी. जबकि संस्थान के डॉ आर.के. वर्मा ने सोयाबीन की फसल में खरपतवार प्रबंधन के लिए अनुशंसित विभिन्न तरीकों एवं रासायनिक खरपतवारनाशकों से सम्बंधित जानकारी दी. तत्पश्चात संस्थान के फसल विभाग प्रमुख, डॉ .एस.डी .बिल्लोरे द्वारा “सोयाबीन फसल के उत्पादन हेतु अनुशंसित सस्य क्रियाये एवं नवीनतम पद्धतियाँ’ विषय पर जानकारी देते हुए उन्होंने कहा की सूखे की अवस्था में जिन किसानों के पास सिंचाई की व्यवस्था हैं, जमीन में दरारें पड़ने से पहले ही सिंचाई कर देनी चाहिए और जिनके पास पानी की उपलब्धता हैं नहीं हैं उन्हें पोटैशियम नाइट्रेट का छिडकाव करना चाहिए. इस अवसर पर” सोयाबीन में कीट नियंत्रण हेतु सोयाबीन के प्रमुख हानिकारक कीट एवं उनकी, पहचान” विषय पर डॉ .लोकेश मीणा द्वारा दिए गए व्याख्यान में उन्होंने कहाँ कि कीटों को यदि प्रारंभिक अवस्था में ही पहचान कर उनकी संख्या बढ़ने से पूर्व समुचित उपाय कर नियंत्रित करने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए.

इस कड़ी में संस्थान के सेवानिवृत्त कीट वैज्ञानिक डॉ .ए .एन .शर्मा ने“ जलवायु सहिष्णु कीट प्रबंधन ”पर व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने जलवायु के अनुसार कीट प्रबंधन की विभिन्न तकनीकियों जैसे की ट्रैप क्रॉप, फेरोमोन ट्रैप इत्यादि को अपनाने की सलाह दी जबकि डॉ .लक्ष्मण सिंह राजपूत ने सोयाबीन का बीज उपचार, लक्षण और प्रमुख बीमारियों के प्रबंधन हेतु फफूंदनाशक, कीटनाशक व जीवाणु कल्चर से बीजोपचार हेतु अनुशंसित तकनीकी बाबत जानकारी दी .



इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के तकनीकी सत्र के बाद कृषक-वैज्ञानिक परिचर्चा सत्र का भी आयोजन हुआ जिसमें प्रतिभागी कृषकों ने अपनी शंकाओं का निराकरण कर उपयुक्त जानकारी प्राप्त की। इस सम्पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन एवं संयोजन भारतीय सोयाबीन अन्सुंधन संस्थान के डॉ. बी.यू. दुपारे, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) द्वारा किया तथा कार्यक्रम की समाप्ति में डॉ. सविता कोल्हे द्वारा सभी संबंधितों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।